**International Journal of Research in Hindi**
**www.hindijournal.in**
**ISSN: 2582-3493**
**Received: 08-08-2025, Accepted: 08-09-2025, Published: 23-09-2025**
**Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 22-24**

# मणिपुरी थाङ्–ता: एक सांस्कृतिक शस्त्रकला

**पेबम निर्मला**
सहायक आचार्य, राजकीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, इम्फाल, मणिपुर, भारत

**सारांश**
प्रस्तुत आलेख मणिपुर राज्य की प्राचीन पारंपरिक युद्धकला "थाङ्–ता" का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करता है। "थाङ्" का अर्थ तलवार तथा "ता" का अर्थ भाला होता है। यह कला केवल युद्धकौशल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्वास्थ्य, जीवन–शैली, आहार–विहार, शिष्टाचार एवं मंत्र–साधना जैसे विविध आयामों का समावेश होता है। थाङ्–ता का प्रशिक्षण अनुशासन, शारीरिक मुद्रा एवं हथियार संचालन की मूलभूत तकनीकों से आरंभ होता है और यह नैतिक व्यवहार तथा चरित्र निर्माण में भी सहायक है। राजशाही काल में मणिपुर की सेवा–आधारित श्लालूप काबाश कर प्रणाली के अंतर्गत प्रत्येक पुरुष को राजकीय सेवा अथवा युद्ध में भाग लेना अनिवार्य था, जिससे थाङ्–ता का प्रशिक्षण आवश्यक बन गया। इस कला में महिलाएँ भी दक्ष थीं। यह प्रणाली मणिपुरी समाज की सामाजिक–सैन्य संरचना, उत्तरदायित्व की भावना और सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती है। मणिपुर की पारंपरिक शासन व्यवस्था में युद्धकला, कर व्यवस्था और सामाजिक उत्तरदायित्व का अद्वितीय समन्वय देखने को मिलता है।

**मूल शब्दः** सांस्कृतिक शस्त्रकला, जीवन–शैली, तकनीकों

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित मणिपुर राज्य सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध रहा है। प्रस्तुत लेख में प्राचीन मणिपुरी युद्ध कला "थाङ्दृता" का संक्षिप्त परिचय किया गया हैद्य "थाङ्दृता" एक प्राचीन युद्ध कला है, जो भारत के उत्तर–पूर्वी में स्थित एक छोटे से राज्य मणिपुर की परंपरा से जूरी हुई है। "थाङ्" का अर्थ 'तलवार'होता है और "ता" का अर्थ है 'भाला'। यहा कला केवल "थाङ्" और "ता" तक सिमित नहीं है, बल्कि इसमें स्वास्थ्य, युद्धदृकौशल, जीवन–शेली, आहार–विहार, शिष्टाचार, पारिवारिक, ब्यवस्था तथा मंत्र–साधना जैसी विविध कलाएं समावेश होता है। थाङ्–ता के प्रशिक्षण में पहला पाठ आमतौर पर अनुशासन, शरीर की मुद्रा, और हथियार पकड़ने की मूलभूत तकनीक से शुरू होता है। यह मणिपुर की पारंपरिक मार्शल आर्ट है, जिसमें 'थाङ' (तलवार) और 'ता '(भाला) का प्रयोग होता है। इस कला को जब प्रारंभिक स्तर पर प्रशिक्षण लिया जाता है, तब यह शारीरिक स्वास्थ्य, नैतिक व्यवहार और सुदृढ़ चरित्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मणिपुर में राजशाही शासनकाल के दौरान लागू 'भूमि राजस्व प्रणाली' विशिष्ट एवं सेवा–आधारित थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति से प्रत्यक्ष कर की अपेक्षा न करते हुए, 18 से 60 वर्ष की आयु के पुरुषों के लिए यह अनिवार्य था कि वे वर्ष में तीन माह अथवा प्रत्येक चालीस दिनों में से दस दिन राजधानी में उपस्थित होकर राजकीय सेवाओं में भाग लें या फिर युद्ध में सम्मिलित हों। इसी कारण मणिपुर के सभी पुरुषों के लिए पारंपरिक युद्धकला 'थाङ्दृता' में दक्ष होना आवश्यक था। केवल पुरुष ही नहीं, अपितु महिलाएँ भी इस कला में निपुण थीं। इस प्रकार की सेवा–आधारित कर प्रणाली को श्लालूप काबाश कहा जाता था, जो मणिपुरी समाज की सामाजिक–सैन्य संरचना और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को दर्शाती है। मणिपुर राज्य की पारंपरिक शासन व्यवस्था में जिस प्रकार सामाजिक उत्तरदायित्व, कर प्रणाली और युद्धकला का समन्वय देखने को मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

सन 1891 में एंग्लोदृमणिपुरी युद्ध के पश्चात मणिपुर को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन कर दिया गया। इस युद्ध के बाद ब्रिटिश प्रशासन ने मणिपुरी समाज की सैन्य क्षमताओं और उसकी पारंपरिक युद्धकलाओं, विशेषकर 'थाङ्दृता', को एक संभावित विद्रोह का स्रोत मानते हुए उस पर कठोर प्रतिबंध लगा दिए। उस समय यदि किसी व्यक्ति को इस युद्धकला को सीखते या सिखाते हुए पाया जाता, तो उसे गंभीर दंड दिया जाता थाकृकई मामलों में उसे मृत्युदंड (फांसी या गोली मारना) अथवा आजीवन निष्कासन जैसी कठोर सजाएँ दी जाती थीं।

इन दमनकारी परिस्थितियों के बावजूद, थाङ्दृता के समर्पित आचार्य (गुरु) और अभ्यासियों ने इस सांस्कृतिक धरोहर को विलुप्त नहीं होने दिया। उन्होंने इस कला को गुप्त रूप से, अपने विश्वासपात्र शिष्यों को सीमित और सुरक्षित वातावरण में सिखाना जारी रखा। उनके इस साहस, प्रतिबद्धता और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व के कारण ही यह पारंपरिक युद्धकला पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रह सकी और आज भी मणिपुरी समाज की गौरवशाली विरासत के रूप में जीवित है।

थाङ्दृता के संरक्षण की यह गाथा केवल एक कला के अस्तित्व की नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता, आत्मसम्मान और सामूहिक चेतना की अदम्य शक्ति का प्रतीक भी है।

थाङ्दृता, मणिपुर की एक प्राचीन युद्धकला, परंपरागत रूप से त्योहारों में एक प्रदर्शन के रूप में आयोजित की जाती रही है। आधुनिक समय में मणिपुरी की पारंपरिक युद्धकला "थाङ्दृता" का प्रस्तुतीकरण एक प्रदर्शन कला अथवा नृत्य कला के रूप में किया जाता है। इस रूपांतरित कला शैली को "थाङ् लैतें" कहा जाता है, जो दो शब्दों से मिलकर बना है कृ श्थाङ्श अर्थात् तलवार और श्लैतेंश अर्थात् सज्जा या श्रृंगार। यह कला रूप युद्ध की पारंपरिक तकनीकों, जैसे तलवार एवं भाले के प्रयोग को सौंदर्यात्मक ढंग से दर्शाते हुए, दर्शकों के मनोरंजन एवं आकर्षण का केंद्र बन चुका है। वर्तमान समय में इसे विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों, उत्सवों एवं पारंपरिक अवसरों पर नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। "थाङ् लैतें" न केवल मणिपुरी समाज की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए रखने का माध्यम है, बल्कि यह मणिपुरी वासियों के लिए गर्व एवं पहचान का प्रतीक बन चुकी है। आधुनिक समय में यह प्रतिस्पर्धात्मक खेलों का भी हिस्सा बन चुकी है, जहाँ खिलाड़ी राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुरक्षा कवच पहनकर अपनी दक्षता प्रदर्शित करते हैं। यह चाहे सांस्कृतिक प्रदर्शन हो या औपचारिक खेल, इसकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण पद्धति में कोई भिन्नता नहीं होती।

मणिपुर की पारंपरिक मार्शल आर्ट थाङ्–ता की प्रथम प्रशिक्षण अवधि किसी सामान्य दिन के समान नहीं होती, बल्कि इसे एक पावन एवं शुभ आरंभ माना जाता है। यह परंपरा शनिवार के दिन आरंभ की जाती है, जो सप्ताह के प्रारंभ में नवीन साहस, अनुशासन एवं समर्पण की ओर एक उद्घोषस्वरूप दिन होता है। थाङ्–ता का प्रशिक्षण कठोर एवं नियमबद्ध परंपराओं के अंतर्गत संचालित होता है। प्रशिक्षण आरंभ करने से पूर्व प्रथम कक्षा में गुरु की पूजा की जाती है, जिसे मणिपुरी भाषा में 'ओजा बोरिबा' अर्थात् 'गुरु स्वीकृति' कहा जाता है। यह अनुष्ठान केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, अपितु गुरु के प्रति आदर, कृतज्ञता और समर्पण का प्रतीक है। इसके माध्यम से विद्यार्थी न केवल शारीरिक कौशल सीखने का संकल्प लेता है, बल्कि आचार्य के मार्गदर्शन में चरित्र और आत्मविकास की ओर भी अग्रसर होता है।

**पूजा के अनुष्ठान के लिए निम्नलिखित विशिष्ट सामग्री आवश्यक होती हैं, जो धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से गहन महत्व रखती हैं**

- पके हुए केले का एक गुच्छा
- खुदै कृ पुरुषों द्वारा परिधान किया जाने वाला पारंपरिक मणिपुरी वस्त्र
- तीन विभिन्न प्रकार के फल
- तीन भिन्न प्रकार के पुष्प
- कबोक कृ धान कीखील से बनने वाली विशेष मिठाइयाँ
- तीन दीपक, जो प्रकाश और पवित्रता का प्रतीक हैं
- कुछ अगरबत्तियाँ, जिनसे वातावरण में सुगंध और पवित्रता आती है
- एवं अंत में, गुरु दक्षिणा, जिसे श्रद्धा और सम्मान के साथ गुरु को अर्पित किया जाता है।

ये वस्तुएं पूजा के पावन अनुष्ठान को सम्पन्न करने में आवश्यक होती हैं और इनकी उपस्थिति गुरु–शिष्य परंपरा के अनुशासन और श्रद्धा को अभिव्यक्त करती है।

इस प्रकार, थाङ्–ता का प्रारंभ न केवल एक तकनीकी प्रशिक्षण है, बल्कि एक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत भी है, जो अनुशासन, सम्मान और समर्पण की परंपरा को जीवित रखती है।

**थाङ्–ता के प्रशिक्षण में निम्नलिखित नियम लागु किये गए हैं**

1. विद्यार्थी को स्कूल या शिक्षक के घर में बिना जुटे के प्रवेश करना होगा।
2. विद्यार्थी को शिक्षक और उपस्थित किसी भी बड़े व्यक्ति को प्रणाम करना चाहिए।
3. प्रत्येक सत्र से पहले या बाद में प्रशिक्षण फर्श को साफ किया जाना चाहिए औए इसपर पानी छिड़का जाना चाहिए।
4. गर्भवती या मासिक वाली महिलाओं को प्रशिक्षण स्थल पर आने की अनुमति नहीं है।
5. प्रशिक्षण से पहले छात्र शिक्षक को आदरपूर्वक प्रणाम करना चाहिए।
6. प्रत्येक सत्रसे पहले छात्र को अपने साथी के सामने झुकना होगा और अपनेहथियार से उन्हें सलामीदेनी होगी।
7. किसी भी हथियार का उपयोग करने से पहले, छात्र को उसे अपनी उँगलियों से छूना चाहिए और फिर सम्मान दिखाने के लिए अपने माथे को छूना चाहिए।
8. छात्र के पैर कभी भी उसके या साथी के हथियार को नहिं छुना चाहिए।
9. जब शिक्षक निर्देश दे रहा तो बिदयार्थियों को स्थिर खरा रहना चाहिए।
10. प्रशिक्षण लेते समय किसी भी प्रकार की नशे (दारू, पान, धुम्रपान) करना वर्जित है।
11. प्रशिक्षण के अंत में, छात्र को पुनरू शिक्षक को प्रणाम करना चाहिए।

ये नियम सुनिश्चित करते है की छात्र सुरक्षित और नियंत्रित तरीके से सीखे क्योंकि एक छोटी सी गलती भी चोट या मृत्यु का कारण बन सकती है। छात्र पहले संतुलन, लचीलापन, चपलता, सहनशक्ति और समन्वय को बेहतर बनाने के लिए बुनियादी व्यायाम करते हैं, सुरुआती छात्र आलगदृआलग आकर की छडियों से सुरुआत करते हैं। कुशल होने के बाद, वे तलवार, ढाल और भाले जैसे हथियारों से अभ्यास करते हैं।

**वर्तमान में थाङ्–ता की स्थिति :** वर्तमान में मणिपुरी पारंपरिक युद्धकला थाङ्–ता को Cultural University में एक शैक्षणिक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है, जहाँ अनेक शोधार्थी और फेलोशिप धारक सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। भारत सरकार के संस्कृति विभाग, नई दिल्ली, द्वारा नृत्य एवं नृत्य–संगीत के क्षेत्र में प्रतिवर्ष कई राष्ट्रीय फेलोशिप एवं छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं। इसी प्रकार, Centre for Cultural Resources and Training (CCRT) भी प्रतिभाशाली बालकों को विभिन्न छात्रवृत्तियों से सम्मानित करता है, जिससे पारंपरिक कलाओं के संरक्षण एवं संवर्धन को बल मिलता है।

"Kanglei Indigenous Martial A rts and Cultural Society" (KIMACS) ने थाङ्–ता के प्रतिष्ठित गुरुओं को सम्मिलित करते हुए एक सम्यक् सिलेबस विकसित किया है, जिसके आधार पर इस कला को विद्यालयों, उच्च विद्यालयों तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर तक व्यापक रूप से पढ़ाया जा रहा है। यद्यपि मणिपुर सरकार द्वारा अभी तक थाङ्–ता के लिए औपचारिक रूप से कोई अधिकारी नियुक्त नहीं किया गया है, तथापि मणिपुर विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक विभाग की स्थापना की गई है, जो इस कला एवं सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन एवं संवर्धन का कार्य कर रहा है।

खेल के क्षेत्र में, Thang-Ta Federation of India के नेतृत्व में अनेक राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताएँ सफलतापूर्वक आयोजित की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न सामाजिक संस्थान एवं संगठन, संस्कृति विभागों से प्राप्त अनुदान के माध्यम से थाङ्–ता के प्रशिक्षण विद्यालय संचालित कर रहे हैं, जिससे इस कला का प्रसार एवं प्रचार होता रहे।

29 अगस्त 2025 को मणिपुर विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग एवं खेल विज्ञान विभाग ने Fit India Committee] Fit India Club एवं NSS Cell के सहयोग से राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। इस समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति ने यह महत्त्वपूर्ण घोषणा की कि थाङ्–ता को Association ofIndian Universities द्वारा एक मान्यता प्राप्त खेल घोषित किया गया है। साथ ही, उन्होंने यह भी सूचित किया कि मणिपुर विश्वविद्यालय आगामी इंटर–यूनिवर्सिटी स्तर पर थाङ्–ता प्रतियोगिता की मेज़बानी करेगा, जिससे इस पारंपरिक मार्शल आर्ट को शैक्षणिक एवं खेल दोनों क्षेत्रों में एक मान्यता प्राप्त स्थान प्राप्त होगा।

**निष्कर्षत:** मणिपुरी थाङ्–ता केवल एक पारंपरिक युद्धकला नहीं, बल्कि यह एक समग्र अनुशासनात्मक प्रणाली है, जो न केवल शारीरिक कौशल बल्कि उच्च नैतिक मूल्यों, आत्मसंयम और सामाजिक दायित्व की भी प्रतिमूर्ति है। इस कला में सिखाए जाने वाले अनुशासन से व्यक्तित्व का विकास होता है, जो व्यक्ति को न केवल युद्ध कौशल में दक्ष बनाता है, बल्कि उसके चरित्र को भी सशक्त और सजग बनाता है। थाङ्–ता के माध्यम से सामाजिक

उत्तरदायित्व की भावना जागृत होती है, जहाँ प्रत्येक नागरिक अपने समाज और राष्ट्र की सुरक्षा एवं समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध होता है। इसके साथ ही यह कला सामाजिक एकता, सहिष्णुता और पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का एक सशक्त माध्यम भी है। अतः मणिपुरी थाङ्–ता का महत्व केवल सैन्य या कलात्मक क्षेत्र तक सीमित नहीं, बल्कि यह मणिपुरी समाज के नैतिक और सामाजिक ताने–बाने की एक अनिवार्य धुरी है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ**

1. थाङ्–ता गी लाइनिं लाइरिक, २०११, KIMACS
2. साइखोम नोदिया, थाङ्–ता सिनदम लाइरिक, २०१५, बोर्ड ऑफ़ सेकेंडरी एजुकेशन, मणिपुर (कक्षा ९ वीं और १० वीं स्तर की पाठ्य पुस्तक)
3. ओक्रम मक्लं, हिद्रोम प्रेमकुमार, थाङ्–ता सिनदम लाइरिक, २०२२, बोर्ड ऑफ़ सेकेंडरी एजुकेशन, मणिपुर(कक्षा ११ वीं और १२ वीं स्तर की पाठ्य पुस्तक)